फ़िक़्ह कि आवश्यकता और इमाम आज़म का स्थान

इसलामी विश्वास व फर्ज़, शरई व वाजिबात, इबादात तथा मामलात से संबंधित सारभूत व प्रमुख ज्ञान प्राप्त करना हर मुसलमान के लिए अनिवार्य व आवश्यकता है।

किन्तु धर्म की समझ प्राप्त करना, इस कि गहराई व गेराई में गैराई में उतरना, विरक्तता इस के लिए स्वाधीन हो जाना तथा इस में सम्पूर्ण निपुणता प्राप्त करना। ताकि प्रथा व आधुनिक व समसामयिक मामले व मसाइल का क़ुरान व हदीस के आधार में उत्तर दिया जा सके।

यह फर्ज़ किफाया के स्तर में है। हर व्यक्ति धर्म के ज्ञान पूर्ण – प्राप्त करने के लिए सम्पूर्ण रूप से समय नहीं दे सकता। मुसलमानों को सम्पूर्ण सद्स्य धर्मशास्त्र के लिए निःशुल्क नहीं हो सकते।

यदि सारे लोग फिख व बसीरत के प्राप्त के लिए व्यस्त हो जाएं तो समाज व व्यवहार में उत्तेजना हस्तक्षेप स्पष्ठ होगा। आर्थिक कार्य प्रभाव होंगे। जबके मुसलमानों के लिए आजीविका समाज भी अनिवार्य व अवश्य है।

इसी लिए मुसलमानों कि एक संघ ऐसी होनी चाहिए जो धर्म के ज्ञान के लिए निर्बाध व अबाध हो जाए, धर्म कि समझ-बूझ के लिए अपने आप को उपलब्ध कर दें। धर्म के शास्त्र में निपुणता प्राप्त करें। ताकि वर्तमान व नव मसाइल का क़ुरान व सुन्नत के आधार में उत्तर दे सकें। जैसा के अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः तथा सम्पूर्ण ईमानवाले तो एक साथ निकल नहीं सकते, ऐसा क्यों नहीं हुआ के हर बड़ा संघ व जमात से कुछ विशेष लोग निकल जाते, ताकि वह धर्म के शास्त्र में समझ को प्राप्त करें तथा अपने समुदाय को ड़राएं जब इन कि ओर वापिसी हों, ताकि वह (पापों के जीवन से) बचें।

(सुरह अत तौबाः 09:122)

फिख का सबूत कुरान करीम से

अल्लाह तआ़ला ने धर्म की समझ के प्राप्त करने का आदेश दिया। इस से फिखा कि आवश्यकता व महत्व व अनिवार्यता होती है। अल्लाह तआ़ला आदेश करता हैः-

भाषांतरः तुम रबवाले बन जाओ, इसलिए कि तुम किताब की शिक्षा देते हो तथा इसलिए कि तुम स्वंय भी पढ़ते हो।

(सुरह आले-इ़मरानः 03:79)

इ़माम बुखारी रहमतुल्लाहि अलैह ने इस आयत करीमा कि व्याख्या में उल्लेख किया हैः-

भाषांतरः हज़रत अबदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया के *कू नू रब्बा नयैयीन* का अर्थ यह है के तुम हिकमत व विचार वाले, फिखा व शास्त्र वाले बन जाओ।

(सहीह बुखारी)

इस व्याख्या व सविस्तार से मालूम होता है के अल्लाह तआ़ला फिक़्ह व धर्मशास्त्र वाले बन्ने का देश रहा है। सहीह बुखारी शरीफ में इस कि व्याख्या यही वर्णन की गई है के फिक़्ह बन जाओओ, हिकमत व बुद्धिमता

वाले बन जाओ, चिंतित व सचेत वाले बन जाओ, धर्म कि समझ बूझ रखने वाले बन जाओ।

फिक़्ह कि असल हदीस शरीफ के आधार में

हज़रत शैकुल इसलाम आरिफ बिल्लाह इमाम अनवारुल्लाह फारूखी बानी जामिया निज़ामिया अलैहि रहमतु वा रिज़वान ने फिक़्ह कि सच्चाई के विषय से दो जिल्दों एक अनुसंधान व शोध पुस्तक लिखी है।

इन में आप ने अत्यन्त इमान प्रोत्साहन शास्त्रार्थ व भावार्थ फरमाई हैं। आप ने फिक़्ह कि सच्चाई तथा फिक़्ह कि महत्व अधिख फुक़्हा किराम के ध्यान दिला कर फुक़्हा किराम से संबंधित उनके स्थान को अत्यन्त विस्तार के साथ वर्णन किए हैं। वर्तमान काल इस का पुनरीक्षण अत्यधिक अवश्य है।

ताजदार कायनात, सैयदुल अम्बया वल मुरसलीन, हामिल उलूम अवील व आखिरीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इरशाद फरमाते हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है इन्हों ने फरमाया हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः हर चीज़ का एक स्तम्भ होता है तथा धर्म का स्तम्भ तो फिक़्ह ही है।

(जामअ अल हादीस, हदीस संख्याः 8154, अल जामअ अल कबीर, हदीस संख्याः 1504, कंज़ुल उम्माल, हदीस संख्याः 28768, अल अलल अल मुतनाहियह, हदीस संख्याः 194)

फिक़्ह किताब व सुन्नत का स्पष्टीकरण

इस हदीस पाक मे इसी बात कि स्पष्ठीकरण की गई के धर्म का निचोड़ फिक़्ह है। धर्म का आधार फिक़्ह है। धर्म का सरमाया फिक़्ह है। फिक़्ह क़ुरान व हदीस के समान किसी चीज़ का नाम नहीं है बल्कि क़ुरान करीम हदीस शरीफ के सहीह समझ व ज्ञान का नाम फिक़्ह है।

फिक़्ह तो धर्म का सहारा है, धर्म का स्तम्भ ही उपस्थित नहीं तो धर्म कहाँ रहा? सहारा टूट गया तो धर्म कहाँ रहा?

फिक़्ह के बारे में कहा जा है के फिक़्ह कि ओर ना जाओ जब फिक़्ह कि ओर ना जाएं तो फिर फिक़्ह से खाली रह कर क़ुरान करीम व हदीस शरीफ कैसे सीखेंगे?

क्यों के क़ुरान व सुन्नत से पथप्रदर्शक व मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए स्वंय कथन का भाषांतर जान लेना काफी नहीं बल्कि इस के सच्चे अर्थ व अस्तित्व को समझना अवश्य है तथा फिक़्ह वास्तव में क़ुरान करीम व हदीस पाक के मंशे को पाने का नाम है।

क़ुरान करीम तथा हदीस इसलामी व्यवस्था कि नीव व बुनियाद हैं, जिन में मानव जीवन के सम्पूर्ण विभाग का पूर्ण समाधान उपलब्ध है। क़ुरान करीम सामान्य रूप से समझ तथा सरलता होने के बावजूद इस में प्रावधान के आयत भी हैं।

क़ुरान कि आयात को समझना एवं इन से मसलों का समाधान व उपाय निकालना साधारण मनुष्य तो दूर कि बात एक विशेषज्ञ ज़बान के लिए भी आसान बात नहीं क्यों के केवल भाषा पर निपुणता प्राप्त होने के कारण से व्यवस्था कि बारीकी व लावण्यता को समझना सरहल नहीं है।

जैसे अंग्रेजी साहित्य का विशेषज्ञ व्यक्ति भारतीय संविधान या किसी भी देश के व्यवस्था कि बारीकियों को नहीं समझ सकता, भाषा के विशेषज्ञ तथा

विस्तार व व्याख्या पर गुणयुक्त की क्षमता के बावजूद कानूनी नजाकतों को समझना, कानूनी दुविधा को दूर करना, अत्यन्त कठिन होता है, इस के लिए किसी विशेषज्ञ कानून से सम्पर्क होना अवश्य है।

फिक़्ह कि आवश्यकता- क़ुरान के आधार पर

क्यों के हर काल के मांग अनेक रहे हैं, जिस कि बिना मानव को हर समय नव मसाइ़ल पेश होते रहते हैं। उदाहरण वर्तमान काल के मसाइ़ल में योग व्यापार (शेर बिजनेस) को देख लिजीए।

इस कि कौनसी स्थिति जाइज़ हैं तथा कौनसी नाजाइ़ज़ है? मियादी जमा व सावधि जमा (फिक्स ड़िपोजिट) करवाना कैसा है? किसी चीज़ कि ओंनलाइन लेन-देन, अपने नियंत्रण में आने से पूर्व किसी चीज़ को बेच देना, जीवन बीमा (लाइफ इन्शुरन्स) का शरई़ आदेश।

इस प्रकार के हजारो मसाइल हैं, जिन को साधारण मनुष्य अपने ज्ञान व बुद्धि, समझ व मन से समाधान नहीं कर सकता तथा ऐसे असंख्या आधुनिक (समसामयिक) मसाइ़ल से संबंधित क़ुरान व हदीस में उपलब्ध इशारों को अपनी छोटे से मास से समझ नहीं सकता।

अर्थात अवश्य है के वह किसी ऐसी अनुकूल इ़माम कि ओर सम्पर्क करे जो इन मसाइ़ल का समाधान क़ुरान करीम व हदीस शरीफ के आधार में वर्णन करते हों।

आइ़मा किराम व फिक़्हा इ़ज़ाम ने क़ुरान करीम तथा हदीस के आधार में नियम व सिद्धांत, कानून व अहकाम वर्णन किए हैं अधिक मानव जीवन में जन्म से मृत्यु तक आने वाले सम्पूर्ण मसाइ़ल व अहकाम को इन्हों ने जिल्द अनुसार *किताबुल तहारह* से *किताबुल फराइ़ज़* तक वर्णन किया, जिस

के सारांश को फिक़्ह कहा जाता है। इसी लिए इन विश्वसनीय आइ़मा किराम व मुजतहिदीन का पालन व सहायक वास्तव में किताब व सुन्नत ही का पालन करना है।

अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः ऐ ईमान लानवालो! अल्लाह की आज्ञा का पालन करो एवं रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का कहना मानो तथा उनका भी कहना मानो जो तुममे अधिकारी लोग हैं।

(सुरह अन निसाः 04:59)

इ़माम अबु जअ़फर तबरी – रहमतुल्लाहि अलैह (मः 310) ने अपनी किताब जामअ़ अल बयान फी तफसीरु क़ुरान में हज़रत अबदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत मुजाहिद, हज़रत इ़ब्न अबु नुजई, हज़रत अ़ता बिन साइब, हज़रत हसन बसरी तथा हज़रत अबु अल आ़लिय रहिमुल्लाह से व्याख्या किया है के अधिकारी लो *औ़ला आमर* से संबंधित फुक़्हा व ज्ञानी लोग है।

(तफसीरुल तबरी, सुरह अन निसाः 04:59)

हज़रत इ़ब्न अबु नजीह रहमतुल्लाहि अलैह ने इ़माम मुजाहिद मक्की ताबअ़ रहमतुल्लाहि अलैह से रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः हज़रत इब्न अबु नजीह रहमतुल्लाहि अलैह से वर्णित है वह इ़माम मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैह से वर्णित करते हैं के اولی الامر से मुराद धर्म में फिक़्ह तथा समझ व विचार रखने वाले फुक़्हा किराम है।

इमाम बुखारी रहमतुल्लाहि अलैह के दादा अध्यापक, इमाम अबदुर रज़्ज़ाख रहमतुल्लाहि अलैह (मः 211) फरमाते हैः اولی الامر से मुराद फिक़्हा, व ज्ञान लोग हैं।

तफसीर कबीर के लेखक फक्रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि अलैह ने हज़रत अबदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत हसन बसरी, इमाम मुजाहिद तथा इमाम ज़हाक रहीमुल्लाह से व्याख्या किया है के اولی الامر से विचार वह विद्वान हैं जो शरीअ़त के अहकाम बताते हैं तथा लोगों को धर्म सिखाते हैं।

(अल तफसीरुल कबीर, सुरह अन निसाः 04:59)

अधिक फरमाते हैं के इस में कोई अंतर नहीं के सहाबा किराम व ताबई़न इ़ज़ाम का एक झुण्ड ने اولی الامر से विद्वान को मुराद लिया है।

(तफसीर अल कबीर- सुरह अन निसा)

اولی الامر से मुराद फ़ुक़्हा हैं- अ़ल्लामा इब्न कसीर कि स्पष्टीकरण

अ़ल्लामा इ़ब्न कसीर इस आयत कि तफसीर में रचना करते हैं-

भाषांतरः हज़रत अ़ली बिन अबु तल्हा, हज़रत अबदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से आयत اولی الامر कि व्याख्या से संबंध रिवायत वर्णन करते हैं के इस से संदर्भ --- फुक़्हा किराम है। तथा इसी प्रकार इमाम मुजाहिद, हज़रत अ़ता, हज़रत हसन बसरी तथा अबु अल

आलिय रहीमुल्लाह ने फरमाया के اولی الامر से संदर्भ से ज्ञानी व विद्वान हैं।

(तफसीर इब्न कसीर, जिल्द 2, पः 345, सुरह अन निसाहः 59)

इमाम आज़म- कुरान आयत व हदीस बुखारी कि बशारत का मसदाख ---

फिक़्ह तथा तखलीद से संबंध अनिवार्य विस्तार के बाद हम इमाम आइमा, सिराज अल्लामा, इमाम आज़म अबु हनीफा हज़रत नुअमान बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु प्रतिष्ठा व प्रतिभा तथा आप कि ज्ञानी व फिक़्ही का वर्णन है।

शअबान में इमाम आज़म के प्रिय देहान्त का महीना है, इस संदर्भ से आप का वर्णन किया जाता है। आप का जन्म 61 हिज्री या 70 या 80 हिज्री में हुआ। तथा पावन देहान्त 2 शअबान 150 हिज्री में हुआ।

सहीह बुखारी, सहीह मुसलिम, जामे तिर्मिज़ी आदि व किताब हदीस पाक में है के जब सुरह जुमआ कि प्रारंभ कि आयात करीमा का प्रकट हुआ जिस में आदेश हैः-

भाषांतरः वही शान वाला खुदा है जिस ने उम्मियों में उन्हीं में से एक रसूल को उठाया जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है, उन्हें निखारता है तथा उन्हें किबात एवं हिकमत (तत्वदर्शिता) की शिक्षा देता है, यद्यपि इस से पूर्व तो वे खुली गमुराही में पड़े हुए थे। एवं उन दूसरे लोगों को भी (किताब और हिकमत की शिक्षा दे) जो अभी उनसे मिले नहीं हैं, वे उन्हीं में से होंगे। और वही प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी हैं।

(सुरह अल जुमआः 62:2/3)

भाषांतरः हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा- मैं हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से निवेद कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! वह (बाद में आने वाले कौन हैं जिन पर आप आयत कि तिलावत फरमाएंगे तथा इन के नफ्स का वर्णन तथा किताब व हिकमत कि शिक्षा फमाएंगे?) हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने उत्तर प्रदान नहीं किया, यहाँ तक के आप ने 3 बार पूछा। (हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं) इस समय हम में हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उपस्थित थे, हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अपना पावन हाथ हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर रख कर आदेश फरमायाः यदि ईमान शुक्र ग्रह व नक्षत्र कि ऊँचाई पर भी हो तो इन में से कुछ लोग बल्कि एक ही व्यक्ति इसे वहाँ से भी प्राप्त करलेगा।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 4897)

हज़रत मुहद्दिसे-देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने ज़ुजाजातुल मसाबीह में इ़माम जलाल उद्दीन सुयूती शाफअ़ रहमतुल्लाहि अलैह कि तबीज़ुल ज़हफय से रिवायत वर्णत किया हैः-

भाषांतरः हज़रत रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः वचन है इस जात कि जिस के वश में मेरी जान है! यदि धर्म शुक्र ग्रह व नक्षत्र पर भी उपलब्ध होता तो अबनाए फारस से एक व्यक्ति इस को पा लेता... इमाम हाफिज़ जलाल उद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं के यह हदीस पाक जिस को इ़माम बुखारी व मुसलिम ने रिवायत की है, असल सहीह है जिस के आधार में सम्पूर्ण वसौख --- के साथ कहा जा सकता है के इस में इ़माम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह कि ओर इशारा है तथा इस के सहत पर सब का विश्वास व निश्चय है.....

इमाम सुयूती के विद्यार्थी अल्लामा शामी का विवरण हैः हमारे शेख का विश्वास है के इमाम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ही इस (हदीस) के मसदाख हैं जिस में किसी संदेह कि सम्भावना नहीं, क्यों के अहले फारस में आप जैसे ज्ञान व उच्च को कोई नहीं पहुँचा।

(ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 1, किताबुल इल्म)

इमाम आज़म के शोध व अनुसंधान को इमाम जाफर सादिख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि निश्चय

हज़रत इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रात अहले बैत किराम का अत्यन्त आदर व सम्मान किया करते तथा आप कि फिक़्ही शोध व अनुसंधान को अहले बैत किराम कि सहायता प्राप्त है।

भाषांतरः इमाम अबु यूसुफ रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं के एक बार हज़रत इमाम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मसजिद हराम में बैठे हुए थे, लोग आते एवं मसाइल पूछते तथा आप उत्तर देते जाते थे, इतने में हज़रत इमाम जअफर सादिख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वहाँ प्रसिद्ध हुए तथा यह स्थिति डे हो कर दख रहे ते, जैसे ही हज़रत इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि नज़र आप पर पड़ी, फिरासत से समझ गए के आप तशरीफ लाय हैं तो तुरंत खडे हो गए तथा निवेदन कियाः ऐ रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के राजकुमार ! यदि प्रथम से मुजे मालूम होता के आप यहाँ खडे हुए हैं तो मैं कभी नहीं बैठता। जब के आप खडे हों। इमाम जअफर सादिख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः आप तशरीफ रखें तथा लोगों को अहकाम बतलाएं, मैं ने अपने पूर्वजों को भी इसी स्थिति पर पाया है।

(अल जवाहिर अल मज़ीयह,--- फी तबखात अल हनफियह)

हज़रत शैकुल इस्लाम जामिया निज़ामिया के प्रवर्तक रहमतुल्लाहि अलैह ने इस घटना को विवरण करने के बाद व्याख्या किया के देखिए ! इ़माम साहिब जो उत्तर देते जाते वह सब मसाइ़ल फिक़्ही थे, जिन को पालन के अनुसार से सब मान रहे थे तथा इ़माम जअ़फर सादिख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने भी इस को निश्चय किया।

(हखीखह अल फिक़्ह, जिल्द 2, पः 49)

इ़माम आज़म के धन्य शिष्ठाचार

हज़रत इ़माम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जहाँ ज्ञान व फज़्ल में एकताए रोजगार हैं। कुरान व हदीस के ज्ञान व बोध के केन्द्र सागर हैं, ऐसी उच्चता व कमाल पर आभूषण होने के साथ साथ उच्च सभ्यचार के पैकर थे।

हज़रत शैकुल इस्लाम जामिया निज़ामिया के प्रवर्तक रहमतुल्लाहि अलैह आप के उच्च शिष्ठाचार तथा उदारता व दानशीलता से संबंध एक घटना, इ़माम मौफख तथा इ़माम कुरदुरी कि मनाखिब अल इमाम आज़म के हवाले से अनुवाद किया हैः-

हज़रत शखीख बलक़ी रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं के एक बार मैं अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह के साथ किसी कि तबीयत पूछने को जा रहा था। रास्ते में एक व्यक्ति आप को देख कर छिप गया तथा दूसरे रास्ते से निकल जाना चाहा।

आप ने उस को पुकार कर कहाः दूसरे रास्ते से क्यों जाते हो? उस ने देखा के इ़माम साहब पहचान गए, लज्जित हो कर खडा हो गया, आप ने जब कारण पूछा तो उस ने कहा के मुझ पर आप के दस हजार दिरहम हैं।

तथा बावजूद अवधि गुज़र जाने के दरिद्रता के कारण से समापन ना कर सका इस लिए सामने आने से मुझे शर्म आई।

इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः सुभानल्लाह ! उन दिरहमों से छिपने कि नौबत पहुंच गई, वह सम्पूर्ण राशि मैं तुम्हें क्षमा कर दिया, तथा तुम से यह निवेदन है के मेरी ओर से तुम्हारे हृदय पर जो गिरानी गुज़री वह तुम क्षमा कर दो।

(हखीखुल फिक़्ह, जिल्द 1, पः 299)

इमाम आज़म और क़ुरान का सम्मान

इमाम मौफख—रहमतुल्लाहि अलैह, इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में क़ुरान पाक के सम्मान व आदर संबंधित एक घटना अनुवाद करते हैः-

भाषांतरः इमामुल आईमा ज़रंजरी रहमतुल्लाहि अलैह ने इस घटना को मुरसलन वर्णित करते हुए फरमायाः इमाम साहब के नंदन हज़रत हम्माद रहमतुल्लाहि अलैह ने जब सुरह फातिहा समाप्त की तो इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने शिक्षक के पास हजार दिरहम उपहार भेजा। इमाम मौफख रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं के इब्न जबारह ने अपनी नामवर पुस्तक *अलकामिल* में लिखा है के नंदन के अध्यापक इमाम आज़म कि सेवा में उपस्थित हुए तथा क्षमा चाही कहा के मैं ने कया किया जो इतने दिरहम मुझे दान किए गए? इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उत्तर दियाः आप ने जो मेरे लडके तो शिक्षा दी है कया इस को साधारण समझ रहे हो? अल्लाह का वचन ! यदि हमारे पास इस से अधिक भी होते तो क़ुरान के सम्मान व आदर के अनुसार से वह सब आप को प्रस्तुत कर देते।

(मनाखिब अल इ़माम आज़म लिल मौफिख, पः 256/257, हखीखह अल प जिल्द 1, पः 299)

इ़माम आज़म- धर्मनिष्ठ व पवित्रता के पैकर

इ़माम फक़्रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि अलैह ने तफसीर कबीर में इ़माम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह के ज़ुहद से संबंधित एक रिवायत अनुवाद किया हैः-

भाषांतरः रिवायत वर्णन की गई है के इमाम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का किसी आग कि पूजा (मजूसी) करने वाले पर उधार था, आप इसे प्राप्त करने के लिए इस के गर तशरीफ ले गए, जब आप इस के घर के दरवाज़े पर पहुंचे तो आप के जूते पर अशुद्धता व अपवित्रता गिर गई, जब आप ने इसे अपने जूते से निकाला तो अपवित्रता का छींटा उडा और मजूसी के घर कि दीवार पर गिरा, तो इमाम अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु चिंतित हो गए, तथा विचार किया के यदि मैं इसे ऐसे ही छोड दुँ तो यह इस आग कि पूजा करने वाले कि दीवार पर दोषी बना रहेगा, तथा यदि इसे खरीद कर निकाल दुँ तो दीवार कि मिठ्ठी गिर जाएगी। फिर आप ने दरवाज़े पर दस्तक दी, तो दासी बाहर आई, आप ने इस से कहाः अपने स्वामी से कहो के अबु हनीफा दरवाज़े पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। तो वह व्यक्ति बाहर आया, इस ने विचार किया के आप इस से अपने उधार कि मांग करेंगे, वे क्षमा चाहने लगा, तो इ़माम अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः इस को तो रहने दो, इस से अधिक महत्व चीज़ मेरे सामने है फिर आप ने दीवार से संबंधित सारी घटना वर्णन की, तथा पूछा के दीवार को पवित्र करने कि कया क़ीमत है? मजूसी ने कहाः मैं प्रथम अपने आप को पवित्र व शुद्ध करनता हुँ, एवं वह इसी समय इस्लाम स्वीकार कर लिया।

(अल तफसीरुल कबीर अल राज़ी, सुरह अल फातिहाः 07)

40 वर्ष इशां के वुज़ू से फज्र कि नमाज़ का समापन

इमाम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह इबादत का असाधारण प्रबंध करते, रात भर इबादत किया करते थे, क़ुरान करीम कि तिलावत कसरत व अधिकता से करते, अल्लाह तआला के दरबार में विनती व निवेदन करते, खतीब बग़दादी ने अपनी तारीक़ में लिखा हैः-

भाषांतरः हज़रत हम्माद बिन खुरैश ने फरमायाः मैं ने असद बिन उ़मर से यह कहते सुना के यह बात में बुद्धि में है के इमाम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 40 वर्ष इशां कि नमाज़ के वुज़ू से फज्र कि नमाज़ समापन करते, आप रात भर एक रकात में सम्पूर्ण क़ुरान करीम कि तलावत करते तथा रात में आप के रोने कि अवाज सुनाई देती यहाँ तक के पडोसियों को आप कि इस स्थिति पर दया आ जाती थी। इमाम आज़म के बारे में यह बात भी याद है के जिस स्थान पर आप का देहान्त हुआ वहाँ आप ने 7000 बार क़ुरान करीम समाप्त किया।

(तारीक़ बग़दादी लिल खतीब, अल बग़दादी, ज़िक्र मन अस मह अन नुअ़मान)

एक संदेह एवं इसका स्पष्टीकरण

40 वर्ष इमाम आज़म कि रात में इबादत के बारे में कुछ भाग से यह संदेह उत्पन्न होता है के यदि इमाम आज़म ने 40 वर्ष हर रात लगातार इबादत

की है, इशां के वुज़ू से फज्र कि नमाज़ संपादन किया है तो फिर आप को औलाद नहीं होती थी।

इस संदेह व शक का स्पष्टीकरण करना अवश्य है। अल्लाह तआ़ला के बन्दे 3 प्रकार के होते हैः-

(1)- कुछ तो वह हैं जो अपने नफ्स पर अत्याचार करते हैं।

(2)- कुछ बीच स्तर (मध्य श्रेणी) के भले लोग हैं जो अच्छे व भले कर्म करते रहते हैं।

(3)- तथा कुछ लोग वह होते हैं जो नेकियों व भलाई (कृपायोग) में सर्वप्रथम करने वाले, भलाई में अग्रसर व पहल करने वाले हैं।

(सुरह अल फातिरः 35:32)

हज़रत इमाम आ़ज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तीसरे प्रकार से हैं। आप भलाई व पुण्य में बहुत अधिक आगे रहने वाले हैं।

नेक व भला सेवक के गुण क़ुरान करीम कहता हैः-

भाषांतरः जो अपने रब के आगे सजदे में एवं खड़े रात बिताते हैं।

(सुरह अल फुरक़ानः 64)

अल्लाह तआ़ला अपने कलाम के द्वारा सूचना दे रहा है के मेरे भले व नेक सेवक ऐसे भी हैं जि कि रातें खियाम व सुजूद में गुज़रती है। कलाम इलाही कि सूचना है, घटने के विरुद्ध नहीं हो सकती।

इस से मालूम हुआ के रात-रात भर इ़बादत करना, भले सेवकों के गुण व लक्षण हैं तथा इ़माम आज़म तो क़ैरात व उदारता करने वाले हैं। भलाई में सर्वप्रथम रहने वाले हैं।

अब रहा पत्नी के अधिकार के समापन तथा हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि सुन्नत पर अ़मल करने का तो इस सिलसिले में अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः ऐ ईमानवालो! चाहिए के जो तुम्हारे मिल्कियत में हों एवं तुममें जो अभी युवावस्था को नहीं पहुँचे हैं, उसको चाहिए कि तीन समयों में तुमसे अनुमति लेकर तुम्हारे पास आएँ: प्रभाल काल (फज्र की नमाज़) की नमाज़ से पूर्व तथा जब दोपहर (ज़ोहर की नमाज़) को तुम (विश्राम के लिए) अपने वस्त्र उतार रखते हो एवं रात्रि की (इशां की नमाज़) नमाज़ के पश्चात, ये तीन समय तुम्हारे लिए परदे के हैं।

(सुरह अन नूरः 58)

इस आयत करीमा से मालूम होता है के परदे के 3 समय हैं। इन 3 विशेष काल में नाबालिग़ बच्चे भी आना चाहते हों तो उन के लिए भी आज्ञा ले कर आना अवश्य है। बिना आज्ञा आना जाइज़ नहीं।

उन 3 समय में दो समय का संबंध रात से है, आप ने नमाज़ इ़शां के बाद तथा फज्र से पूर्व इन दो समय को इ़बादत के लिए निश्चित – कर लिया था तथा ज़ोहर से पूर्व विश्राम का समय भी सत्र के समय में शामिल है।

तो इस क़ुरानी अनुदेश व निर्देश के आधार में पत्नी के अधिकार के समापन तथा औलाद को प्राप्त के सिलसिले में जो विरोध किया गया उसका अंत होता है। अर्थात बुज़ुर्गों के मामलात में इस प्रकार के गलत सोंच-विचार

करना के वह एक नेक कार्य कर रहे हों तो उन से दुसरा गलत कर्म हो रहा होगा, सुधारता के योग्य कर्म है।

इस प्रकार के – से करना तथा इन मामलात में कुछ कहने से परहेज़ करना एवं अल्लाह तआ़ला का भय व खौफ रखना चाहिए।

30 वर्ष तक रोज़ों का प्रबंध

इ़माम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह दिन में रोज़े रखते थे एवं रात में विश्राम नहीं करते थे जैसा के तारीक़ बग़दादी में हैः-

भाषांतरः इ़माम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पोते हज़रत इसमाइ़ल बिन हम्माद अपने पिता हज़रत हम्माद बिन अबु हनीफा से वर्णित करते हैं जब मेरे पिता का देहान्त हुआ तो हम ने हज़रत हसन बिन अ़म्मारह रहमतुल्लाहि अलैह से निवेदन किया के वह पूज्य पिता को स्नान दें, इन्हों ने यह विनती स्वीकार की। जब स्नान दिया तो यह कहाः अल्लाह आप पर रहम परमाए एवं आप के स्तर बुलंद करें, आप ने 30 वर्ष से रोज़ा नहीं छोडा और 40 वर्ष से आप के दाहिने हाथ ने रात में टेक नहीं लगाया। आप ने अपने बाद वालों के लिए कठिनाई वाले कार्य के द्वार खोल दियए तथा हुफ्फाज़ को पीछे छोड दिया।

(तारीक़ बग़दादी लिल खतीब अल बग़दादी, बाबुल नौन--, ज़िक्र मिन इसमह अन नुअ़मान)

हदीस के ज्ञान में इ़माम आज़म का स्थान

यह बात छिपाई नहीं जा सकती के हज़रत इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विशाल व जलीलुल खद्र उस्तादों कि रिवायत किए हुए हदीस शरीफ से हदीस के पुस्तकें से मालामाल हैं।

इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के 4000 अध्यापक व शिक्षक हैं। आप को यह विशिष्टता प्राप्त है के आप के मान्य अध्यापक में जलीलुल खद्र सहाबा उपस्थित है। इसी प्रकार आप ने असंख्या ताबाईन से हदीस के ज्ञान व प्रज्ञानता को प्राप्त किया।

जैसा के अल्लामा इब्न आबेदीन शामी रहमतुल्लाहि अलैह ने रद्दुल मुहतार के – में उल्लेख किया है। (रद्दुल मुहतार, मुखदम्मा)

इमाम बुक़ारी के 20 सलासियात इमाम आज़म के छात्र व मुक़ल्लिद मुहद्दिसीन से मरवी सहीह बुखारी की सनद में 32 हनफी मुहद्दिसीन – जिन्होंने इमाम आज़म से शिक्षा प्राप्त की

इमाम बुक़ारी अलैहि रहमा ने सहीह बुखारी में 22 हदीस ऐसी विवरण हैं जिस में इमाम बुक़ारी तथा सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बीच केवल 3 वास्ते हैं। यह इन के लिए एक विशाल कृपा कि बात है तथा इन में से 20 हदीस कि सनदों में इमाम बुक़ारी के अध्यापक हनफी मुहद्दिसीन हैं।

हज़रत मक्की बिन इब्राहीम हनफी मुहद्दिस हैं एवं इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के छात्र व विशेष हैं जिन से इमाम बुक़ारी ने 11 सलासिल ली हैं तथा इमाम अबु आसिम ज़हहाक बिन मुक़लद से 6 सलासियास तथा इमाम मुहम्मद बिन अबदुल्लाह अन्सारी से 3 सलासियान रिवायत की है।

इन 20 सलासियान में इ़माम बुक़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विशाल व महान अध्यापक मुहद्दिसीन वह हैं जो इ़माम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विशेष छात्र हैं।

अर्थात इ़माम बुक़ारी ने इमाम आज़म के मुखल्लिद तथा अपने हनफी अध्यापकों पर गर्व किया है। क्यों के आप कि सनद में यदि इन हनफी मुहद्दिसीन ना रहे तो आप के पास केवल दो सलासियान बाखी रह जाती है।

अधिक इमाम बुक़ारी ने सहीह बुखारी में 32 हनफी मुहद्दिसीन से रिवायात ली हैं जो स्पष्टतः इमाम आज़म रहमतुल्लाहि अलैह के छात्र व विद्यार्थी फिक़्ही मसाइ़ल में आप के पालन व मुखल्लिद हैं।

इस से यह बात स्पष्ट होती है के फिक़्ह हफी वह द्वार व रास्ता है जिस को आईमा मुहद्दिसीन ने अपनाया है। जीवन भर --- हदीस कि सुरक्षा करने वालों ने जिन अनुसंधान व शोध को प्राप्त किया हो वह क्योंकर हदीस के विरुद्ध हो सकती हैं?

रिवायतों व व्याख्या में इमाम आज़म का महत्व

इ़माम मवखफ रहमतुल्लाहि अलैह ने इसमाइ़ल बिन बिश्र के हवाले से लिखा है:-

भाषांतरः इसमाइ़ल बिन बिश्र ने कहाः हम हज़रत मक्की बिन इ़ब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैह के प्रवचन के सभा में उपस्थित थे। आप ने फरमाया के हमें इ़माम अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हदीस वर्णन फरमाई, समारोह से एक अजनबी व्यक्ति कहने लगाः हमें बजाए अबु हनीफा के इ़ब्न

जुरैज कि हदीस वर्णन किजीए। तब इमाम मक्की बिन इब्राहीम ने जलाल कि स्थिति में फरमायाः हम असभ्यचार व बेअदब को प्रवचन नहीं देते, आप इस समय तक प्रवचन हदीस समाप्त कर दिया जब तक के इस को समारोह से ना निकाल दिया गया जब वह चला गया तो आप इमाम आज़म से मरवी अहादीस वर्णन फरमाने लगे।

(मनाखिब अल इमाम अल आज़म लिल मवखफ, जिल्द 1, पः 204)

इमाम आज़म के एक छात्र से सिहा सित्ता आदि में 2496 हदीस मरवी

इमाम आज़म के जलीलुल खद्र छात्र व मुहद्दीस (हदीस के विद्वान) अबदुर रज़्ज़ाख जिन के नाता सांसारिक ज्ञान जानती है के आप हदीस के ज्ञान में निपुणता व विशेषज्ञता रखते थे। जिन से सिहा सित्ता सहीह बुखारी, सहीह मुसलिम, जामे तिर्मिज़ी, सुनन नसाई, सुनन अबु दाउद, सुनन इब्न माजह, व अधिक मुसनद अहमद बिन हंबल तथा सुनन दारमी, इन 8 पुस्तकों में 2496 रिवायात उपलब्ध हैं।

इस से इमाम आज़म के हदीस के ज्ञान में उत्तमता व उच्च स्तर का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। छात्र की यह शान है के बडे बडे मुहद्दिसीन इन के छात्र हैं। आईमा मुहद्दिसीन इन से हदीस लेते हैं तो अध्यापक व शिशक्ष कि ज्ञानी शान व प्रतिभा कया होगी।

(इमाम अबु हनीफा अल नुअमान मुहदिसा फी कुतुबुल मुहद्दिसीन, पः 58)

इमाम आज़म के जिस छात्र व मुहद्दिस अबदुर रज़्ज़ाख से इस प्रकार अधिकता से रिवायात सिहा सित्ता (6 हदीसों के किताबें) आदि हदीस कि पुस्तकों में आई हैं वह खुद इमाम आज़म अबु हनीफा के प्रशंसक हैं। हदीस का ज्ञान में इमाम आज़म कि यह शान व प्रतिभा है के इमाम बुक़ारी तथा

इमाम मुस्लिम के अध्यापक और अन्य मुहद्दिसीन के अध्यापाक व शिक्षाक इ़माम आज़म से हदीस रिवायत करते हैं।

इन्हों ने अपनी लिखित पुस्तकों में इमाम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हदीसें रिवायत कि है।

इ़माम आज़म ने किताब व सुन्नत के विरुद्ध कोई निर्णय नहीं दिया- शेक़ इ़ब्न हज़म के स्पष्टीकरण

शेक़ इ़ब्न जुज़म ज़ाहिरी ने भी इमाम आज़म के इस्तेदलाल के तरीक़े के सिलसिले में स्पष्ट रूप से वर्णन किया के आप किताब व सुन्नत के विरुद्ध कभी कोई निर्णय नहीं किया करते तथा ना सहाबा के लोकोक्ति के सिवा कोई राय व सुझाव रखते थे। इन्हों ने इमाम आज़म के इस कथन का हवाला दिया है के आप ने कहा हैः-

भाषांतरः अल्लाह तआ़ला ने जो नाज़िल फरमाया है वह सर आँखों पर है, और जो हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से मरवी है, उसे स्वीकार किए तथा पालन करते हैं और सहाबा किराम से जो अनेक लोकोक्ति व्याख्या हैं, हम ने इन्हीं में से किसी कथन को अपनाया है तथा हम ने कभी इन के विरुद्ध नहीं किया तथा जो ताबई़न से व्याख्या है तो वह ताबअ़ हैं एवं हम भी ताबअ़ हैं। इस प्रकार आप ने ताबई़न से अंतर को रवा रखा तथा यह सच्चाई है के इ़माम आज़म ने सहाबा किराम का आदर व सम्मान करते हुए इन के कथन नज़र अंदाज़ करने को जाइज़ नहीं रखा।

(अल अहकाम ला इब्न हज़म)

अर्थात इ़माम आज़म कहते हैः-

नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के जो आदेश हम तक आए हैं वही हमारा सरमाया है। मुसतफा अलैहि सलातु सलाम कि सेवा के बाद मेरी कया मजाल व हिम्मत के अपनी राय को पेश करुँ। हबीब करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का आदेश सामने होता है तो सर झुका देता हुँ। मेरे माता-पिता आप पर क़ुरबान , मेरी कया हैसियत के विवाद कर सकुँ।

हबीब करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के आदेश के सामने मैं ने अपनी पिशानी को क़म कर दिया इसी को सरमाया बनाया तथा इसी कि नीव पर मसले बता दिया। तथा जब सहाबा किराम अलैहि रिज़वान के लोकोक्ति आते हैं इन का सम्मान व आदर करते हुए मैं इसी में से एक कथन को अपनाया करता हुँ।

सहाबा के लोकोक्ति से हट कर किसी और कथन पर मसला नहीं बताता। यथा सब से प्रथम तो क़ुरान पाक है दुसरा मुसतफा अलैहि सलातु सलाम कि सुन्नतें। तीसरा सहाबा किराम के आचरण हैं, यही इ़माम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का सरमया है। इसी पर आप के मसाइ़ल कि नीव व बुनियाद है। आप के वर्णन हुए मसाइ़ल के दलीलें यही हैं।

फिर फरमाया लिप्यंतरणः- *वमा जा अ़न ग़ैरा हुम फहुमुर रिजाल वा नहनुह रिजाल* सहाबा किराम के अलावा किसी का सुझाव होता है, कोई बात खुद ताबइ़न ने वर्णन की होती है तो वह भी ताबइ़न हैं तथा मैं भी ताबअ़इ़ हुँ, जिस प्रकार इन्हों ने निवास किया है मैं भी निवास करता हुँ।

इ़माम आ़ज़म ने 83,000 मसाइ़ल स्पष्ट किए

इमाम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने धन्य जीवन के ज़ुहद व धर्मनिष्ठ, तहारत, भय व खौफ तथा कृपा में गुज़ारा, जिस के – अल्लाह तआ़ला ने आप के सीने को फिक़्ह के ज्ञान के लिए खोल दिया था।

अल्लाह तआ़ला ने आप को असाधारण बुद्धिमति कि क्षमता व शक्ति, इस्तेदलाल कि शक्ति आदि प्रदान किया। आप ने खुद ही किताब व सुन्नत कि मजबूती से, 83,000 मसाइ़ल को स्पष्ट किया हैं।

इमाम आज़म ने किताब व सुन्नत के सम्मुख कभी अपनी राय व सुझाव नहीं प्रस्तुत किया, बल्कि आप ने किताब व सुन्नत ही से मसाइ़ल का समाधान निकाला है।

इ़माम बुक़ारी कि प्रशंसा करने वाले मुद्दिसीन ने भी फिक़्ह हनफी को मान्य माना है

हज़रत यहया बिन मुईन रहमतुल्लाहि अलैह विशाल मुहद्दिस (हदीस के विद्वान) तथा इमाम हैं उन का पाया ज्ञानी इस प्रकार विशिष्ठ था के इन के नाते से इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैः-

भाषांतरः जिस हदीस को यहया बिन मुईन नहीं जानते वह वास्तव में हदीस ही नहीं।

ऐसे विशाल मुहद्दिस इ़माम आज़म के मसलक पर फतवा दिया करते थे, इनका वर्णन हैः-

भाषांतरः अधिप्रमाणित व शासनानुरूप फिक़्ह इ़माम आज़म कि फिक़्ह है, इस पर मैं ने अपने दौर के मुहद्दिसीन को अ़मल करते हुए पाया है।

(वफियात अल अ़यान, हुर्फ उल नौन, अल इ़माम अबु हनीफा, अल वाफी बिल वफियात, हुर्फुन नौन, अल इ़माम अबु हनीफा, तारीक़ बग़दाद, बाबुल नौन, मनाखिब अबी हनीफा, हक़ीक़तुल फिक़्ह, जिल्द 2, पः 41)

इ़माम आज़म कि फिक़्ह को अधिप्रमाणित व शासनानुरूप घोषित देने वाेले यहया बिन मुईन इन हदीस के इ़मामों में से एक हैं जिन के सामने इ़माम बुक़ारी रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी पुस्तक लिखने के बाद पेश की थी, जब उन्हों ने सन्तुष्ट किया तथा सनद प्रदान की तब इ़माम बुक़ारी रहमतुल्लाहि अलैह ने इस को ज्ञान के बाजार में लाया।

जिस कि स्पष्टिकरण हाफिज़ इ़ब्न हज्र अ़सखलानी रहमतुल्लाहि अलैह ने मुक़दमे फत्ह उल बारी में कही है। यदि इ़माम आज़म के पैरोकारों व मान्ने वालों को बिदअ़ती (), गुमराह या मुशरिक कहा जाए तो इमाम बुक़ारी पर – घोषित होगा के इन्हों ने गुमराह तथा बिदअ़ती (प्रवर्तक) मुहद्दिसीन से सहीह बुखारी में रिवायात ली हैं।

इस प्रकार इ़माम बुक़ारी एवं आप कि पुस्तक कि साहित्य हैसियत भी मजरूह हो जाती है, इस लिए महत्व देते हैं के इस प्रकार अंतर विवाद का शिकार होने के बजाए अकाबीर पर सम्पूर्ण सन्तुष्ठि रखते हुए इन कि अनुसंधान व शोध से लाभ उठाया जाए।

यदि किसी को पूर्ण इ़मामों कि फिक़्ही शोध व अनुसंधान से निश्चिंता नहीं है तथा वह अपने शोध पर अ़मल व कर्म चाहता है तो वह अपने कर्म का ज़िम्मेदार है।

अर्थात जो लोग इमामों के वर्णन किए हुए क़ुरान व हदीस से अनुसंधान फिक़्ही मसाइ़ल व समस्या एवं विषय पर अ़मल कर रहे हैं इन्हें मलामत का निशान ना बनाया जाए।

आज इस्लाम के विरोधी धर्म अनेक रूप से धर्म पर आक्रमण हो रहे हैं, सम्पूर्ण गुणों को जमा कर के इन के भायनक आक्रमण का उत्तर देना समय का महत्व मांग है। बजाए इस के अतः एक दूसरे के विरुद्ध करना शरन भी श्रेष्ठतर नहीं एवं बुद्धिमता के रूप से भी श्रेष्ठ नहीं।

धर्म व उदारता के मांग पर कर्म करते हुए इस तरीक़े को पूर्ण रूप से --- तर्क कर देना चाहिए। अल्लाह तआ़ला हमें अपने कर्म का परिश्रण करने कि मार्गदर्शन प्रदान फरमाए। भलाई व अच्छाई को अपनाने तथा बुराई व खराबी से परहेज़ करने व दूर रहने कि मार्गदर्शन दान फरमाए।

आमीन